Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

आधुनिक भारत

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग–2

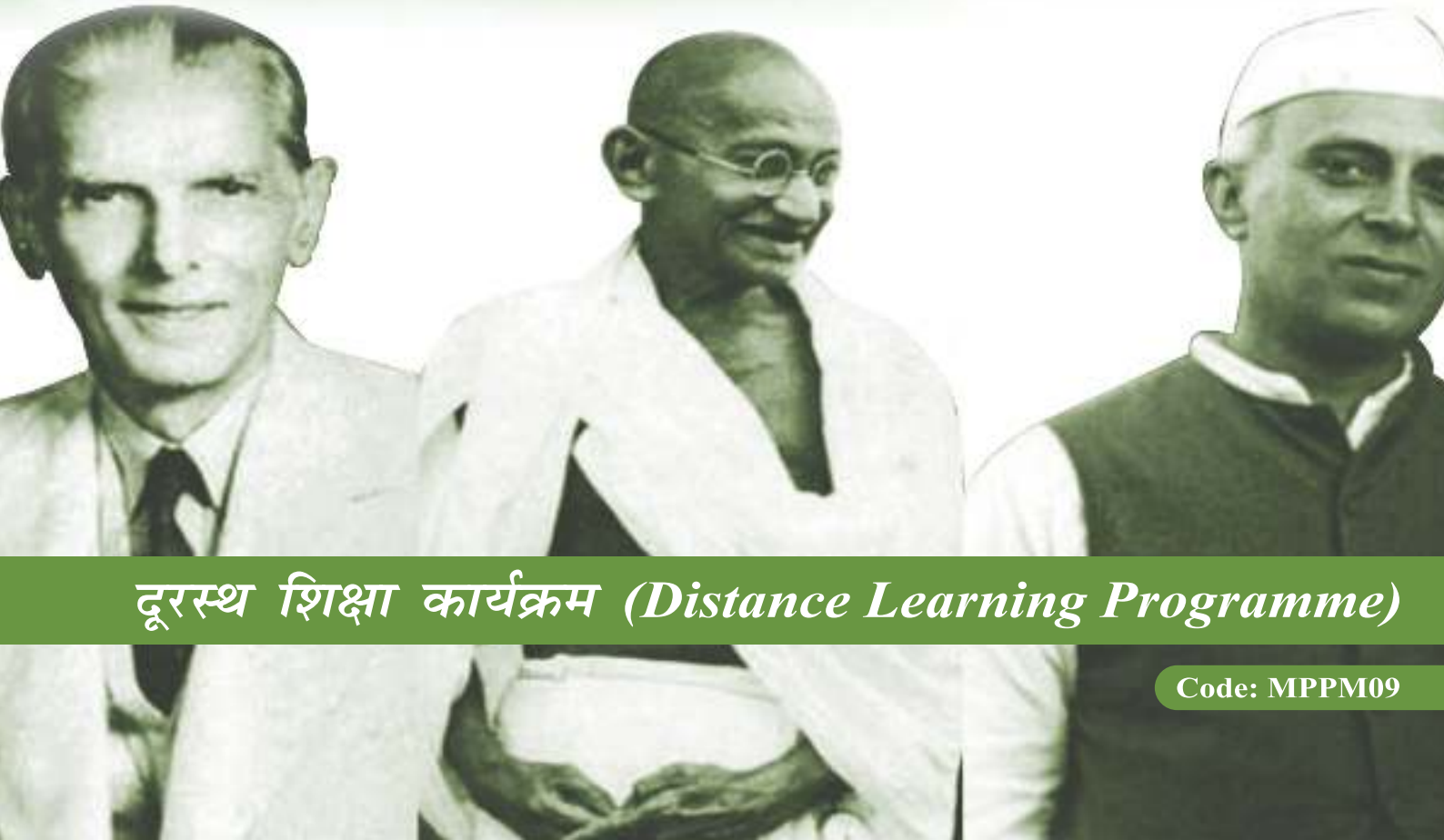

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: MPPM09

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

आधुनिक भारत

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग–2

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 87501 87501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

10. राष्ट्रीय आंदोलन **5–52**

10.1 उदारवादी चरण 5

10.2 उग्रवादी चरण 7

10.3 बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी आंदोलन 9

10.4 क्रांतिकारी आंदोलन (प्रथम चरण) 14

10.5 होमरूल आंदोलन 19

10.6 गांधीवादी आंदोलन (प्रथम चरण) 21

10.7 क्रांतिकारी आंदोलन (द्वितीय चरण) 27

10.8 गांधीवादी आंदोलन (द्वितीय चरण) 29

10.9 स्वतंत्रता संग्राम में मध्य प्रदेश का योगदान 42

11. राष्ट्रीय आंदोलन में मज़दूरों एवं महिलाओं की सहभागिता **53–59**

11.1 ब्रिटिश भारत में मज़दूर आंदोलन 53

11.2 राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की सहभागिता 54

12. ब्रिटिश गवर्नर, गवर्नर जनरल, वायसरॉय **60–69**

13. गणतंत्र के रूप में भारत का उदय **70–77**

13.1 राज्यों का पुनर्गठन 70

13.2 मध्य प्रदेश का गठन 73

13.3 छत्तीसगढ़ के पृथक्करण के बाद मध्य प्रदेश 75

14. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के प्रमुख घटनाक्रम **78–93**

14.1 रियासतों का एकीकरण 78

14.2 सांप्रदायिक हिंसा 83

14.3 शरणार्थियों की समस्या 84

14.4 भारत-चीन युद्ध, 1962 85

14.5 भारत-पाकिस्तान युद्ध 87

15. मध्य प्रदेश के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व **94–101**

16. सांस्कृतिक विरासत **102–134**

16.1 भारत में वैश्विक स्तर के धरोहर स्थल 102

16.2 मंदिर निर्माण की विभिन्न शैलियाँ 113

16.3 चित्रकारी 115

16.4 मध्य प्रदेश की प्रमुख ऐतिहासिक इमारतें और पर्यटन स्थल 118

17. मध्य प्रदेश के साहित्य एवं साहित्यकार **135–145**

17.1 प्राचीनकाल के साहित्य एवं साहित्यकार 135

17.2 मध्यकाल के साहित्य एवं साहित्यकार 137

17.3 आधुनिक काल के साहित्य एवं साहित्यकार 138

17.4 लोक साहित्यकार 143

18. मध्य प्रदेश की प्रमुख रियासतें **146–156**

18.1 सिंधिया राजवंश/ग्वालियर रियासत 146

18.2 होल्कर वंश 147

18.3 बघेलखंड रियासत/रीवा रियासत 149

18.4 भोपाल रियासत 152

18.5 बुंदेलखंड राज्य/बुंदेला राजवंश 153

18.6 गोंडवाना रियासत 155

अध्याय
10

राष्ट्रीय आंदोलन (National Movement)

भारत लंबे समय तक ब्रिटिश शासन का उपनिवेश रहा है। ब्रिटेन की औपनिवेशिक नीतियों तथा ब्रिटिश सत्ता से मुक्ति हेतु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ और एक संगठित आंदोलन की शुरुआत हुई। भारतीय इतिहास में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध लंबे समय तक चलने वाले इस आंदोलन को राष्ट्रीय आंदोलन के नाम से जाना जाता है। इसकी औपचारिक शुरुआत 1885 ई. में कॉन्ग्रेस की स्थापना के साथ हुई जो कई उतार-चढ़ावों से गुज़रते हुए भारत की स्वतंत्रता तक अनवरत रूप से जारी रहा।

यद्यपि, उन्नीसवीं शताब्दी का भारत विभिन्न जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र में विभाजित था तथा ब्रिटिश शासकों ने भी इस विभाजन को बनाए रखने के लिये **फूट डालो, राज करो** की नीति को अपनाया, तथापि भारत एक भौगोलिक इकाई मात्र नहीं था, बल्कि इस विविधता में सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना भी अंतर्निहित थी, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन के आरंभ, विकास एवं सफलता की ओर अग्रसर होने में सहायता प्रदान की। विविधता के मूल में अंतर्निहित यह राष्ट्रीय चेतना ही थी जिसने राष्ट्रवाद का विकास किया तथा भाषा, धर्म, जाति के बंधन को लाँघते हुए लोगों को एक सूत्र में संगठित किया। हालाँकि यह भी सच है कि अंग्रेज़ों द्वारा स्थापित प्रशासनिक व्यवस्था तथा आधुनिक विचारों के प्रचार-प्रसार ने भी एक सीमा तक राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया, लेकिन ब्रिटिश शासन का कभी भी यह उद्देश्य नहीं था कि भारत में राष्ट्रवाद का बीजारोपण हो बल्कि उन्होंने अपने औपनिवेशिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये ही कुछ सुधार किये, जिससे भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ और वे राष्ट्रीय आंदोलन के लिये प्रेरित हुए।

10.1 उदारवादी चरण *(Moderate Phase)*

भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना के साथ ही भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के एक नए युग का आरंभ हो गया। चूँकि कॉन्ग्रेस का शुरुआती नेतृत्व जिन नेताओं ने किया, उनके स्वभाव एवं कार्य-प्रणाली उदार प्रकृति के थे, इसलिये राष्ट्रीय आंदोलन के प्रथम चरण को उदारवादी चरण के नाम से जाना जाता है। कॉन्ग्रेस के आरंभिक 20 वर्षों के काल को **उदारवादी राष्ट्रीयता** की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि इस काल में कॉन्ग्रेस की नीतियाँ काफी उदार थीं। इस समय कॉन्ग्रेस पर समृद्धशाली मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का प्रभाव था, जिनमें अधिकतर पत्रकार, वकील, इंजीनियर एवं डॉक्टर इत्यादि थे। ये उदारवादी नेता अंग्रेज़ी सरकार के प्रति निष्ठावान थे तथा उन्हें अपना शत्रु नहीं मानते थे। **दादाभाई नौरोजी** के इन शब्दों से अंग्रेज़ों के प्रति उनकी भावनाओं की मूर्त अभिव्यक्ति का पता चलता है- "हम ब्रिटिश प्रजा हैं, हम अपने हक की मांग कर सकते हैं। अगर हमें ब्रिटेन की सर्वश्रेष्ठ संस्थाओं से वंचित रखा जाता है तो फिर भारत को अंग्रेज़ों के स्वामित्व में रहने से क्या लाभ? यह तो एक और एशियाई निरंकुश शासन मात्र होगा।"

इस समय के उदारवादी नेताओं में फिरोज़शाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी, व्योमेश चंद्र बनर्जी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, आनंद मोहन बोस और रमेशचंद्र दत्त प्रमुख थे। कालांतर में द्वारिकानाथ गांगुली, एम.जी. रानाडे, वीर राघवाचारी, आनंद चारलू और गोपालकृष्ण गोखले भी इसमें शामिल हो गए- ये नेता उदारवादी नीतियों एवं अंहिसक विरोध प्रदर्शन में ही विश्वास करते थे।

उदारवादियों की कार्य-प्रणाली *(Working system of moderates)*

उदारवादियों को नरमपंथी के नाम से भी जाना जाता था, उनकी कार्य-प्रणाली एक विशिष्ट तरीके की थी, जिसमें वे अपने प्रतिवेदनों, भाषणों और लेखों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार एवं उनके द्वारा स्थापित अंग्रेज़ी राज की प्रशंसा करते थे और अपनी मांगों को उनके समक्ष रखते थे। वे अपनी उन मांगों को समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं के माध्यम से स्पष्ट करते थे ताकि जनता पर भी उनके कार्यों का प्रभाव पड़े।

विजयराघवगढ़ के सरयू प्रसाद सिंह	विजयराघवगढ़, मध्य प्रदेश के कटनी ज़िले का एक कस्बा है। विजयराघवगढ़ के राजा सरयू प्रसाद ने मात्र 17 वर्ष की उम्र में 1857 की क्रांति में अंग्रेज़ों के विरुद्ध बगावत शुरू की थी। वास्तव में युवराज सरयू प्रसाद सिंह क्रांतिकारी विचारधारा के एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे। 1857 के क्रांतिकारी ने जब बहादुर शाह जफर को अपना सम्राट घोषित किया और दिल्ली पर अधिकार कर लिया तब विजयराघवगढ़ एकमात्र ऐसा राज्य था जिसने तोपें दागकर क्रांति का अभिनंदन किया था और विदेशी सत्ता को चुनौती दी थी। सन् 1865 में सशस्त्र सैनिकों के पहरे पर काले पानी की सज़ा के लिये 'रंगून' जाते समय यह वीरात्मा पहरेदार की कटार छीनकर अपने सीने में भोंककर शहीद हो गए। उन्होंने कहा था कि 'मैं काला पानी से मौत को अधिक पसंद करता हूँ। मेरी प्रजा में तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति भी जेल में रहना पसंद नहीं करता फिर मैं तो उनका राजा हूँ।' उन्हें सेना से निकालकर उनकी गिरफ्तारी के आदेश जारी कर दिये गए। जैसे ही रणमत सिंह को पता चला तो वह 300 देशभक्त सैनिकों को लेकर निकल पड़े व अंग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोह में शामिल हो गए। इन्होंने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को विस्तृत करते हुए बघेलखंड तथा बुंदेलखंड के बाहर छत्तीसगढ़, छोटानागपुर तथा नर्मदा अँचल के सलीमनाबाद तक फैला दिया। रीवा राज्य के कुछ अधिकारियों ने अंग्रेज़ों से मिलकर रणमत सिंह से विश्वासघात कर उन्हें पकड़वा दिया। ब्रिटिश सेना ने उन्हें पकड़कर बाँदा जेल भेद दिया, जहाँ अगस्त 1859 में उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया।
चंद्रशेखर आज़ाद	23 जुलाई, 1906 को चंद्रशेखर आज़ाद का जन्म अलीराजपुर ज़िले के भाबरा ग्राम में हुआ था। 27 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में इनकी पुलिस के साथ मुठभेड़ हुई जिसमें वह आखिरी गोली खुद को मारकर शहीद हो गए।
गुलाब सिंह पटेल	महाकौशल क्षेत्र के वीर गुलाब सिंह पटेल का नाम मध्य प्रदेश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में लिया जाता है। गुलाब सिंह के नेतृत्व में अगस्त 1942 में गिरफ्तार किये गए कॉन्ग्रेस नेताओं के विरोध में जबलपुर में एक आंदोलन चलाया गया। आंदोलन में पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किये जाने के परिणामस्वरूप गुलाब सिंह शहीद हो गए। इस घटना ने संस्कारधानी सहित पूर महाकौशल क्षेत्र में 'करो या मरो' की भावना को और प्रबल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- राष्ट्रीय आंदोलन के प्रथम चरण में कॉन्ग्रेस का स्वरूप धर्मनिरपेक्ष बना रहा क्योंकि भारत के प्रत्येक धर्म के अनुयायियों ने कॉन्ग्रेस की अध्यक्षता की थी।
- उदारवादी नेता रमेशचंद्र दत्त ने भारत के आर्थिक इतिहास पर प्रथम पुस्तक 'Economic History of India' की रचना की।
- प्लांड इकोनॉमी फॉर इंडिया पुस्तक के लेखक एम. विश्वेश्वरैया हैं। इन्हें भारत की योजना का जनक कहा जाता है।
- उदारवादियों के प्रयास से 1886 ई. में भारत और इंग्लैंड में एक साथ सिविल सेवा परीक्षा का आयोजन तथा भारतीय व्यय की समीक्षा हेतु 1895 में **वैल्वी आयोग** का गठन हुआ।
- प्रथम चरण के उदारवादी नेता दादाभाई नौरोजी ने धन निष्कासन का सिद्धांत प्रस्तुत किया तथा लोगों के सामने ब्रिटिश सरकार द्वारा किये जाने वाले आर्थिक शोषण का एक ब्योरा रखा।
- भारत में उग्रवाद आंदोलन का श्रेय बाल गंगाधर तिलक को दिया जाता है, उन्होंने ही गणपति महोत्सव तथा शिवाजी महोत्सव के माध्यम से लोगों में राष्ट्रवादी भावना का प्रसार किया।
- 'स्वराज' का नारा सर्वप्रथम बाल गंगाधर तिलक ने ही दिया परंतु कॉन्ग्रेस के मंच से इसकी मांग दादाभाई नौरोजी के द्वारा की गई।

- बंगाल में प्रथम क्रांतिकारी संगठन **अनुशीलन समिति** थी, जिसकी स्थापना 1902 ई. में मिदनापुर में ज्ञानेंद्र बसु द्वारा तथा कलकत्ता में जतींद्रनाथ बनर्जी और बारींद्रनाथ घोष द्वारा की गई।
- भारत से बाहर अन्य देशों में स्थापित पुरानी संस्था इंडिया होमरूल सोसाइटी थी, जिसकी स्थापना **श्यामजी कृष्ण वर्मा** ने लंदन में 1905 ई. में की थी।
- मुस्लिम लीग के 1913 ई. के लखनऊ अधिवेशन में पहली बार मुहम्मद अली जिन्ना ने भाग लिया तथा लीग के नेताओं ने स्वशासन को राष्ट्रीय लक्ष्य स्वीकार किया और कॉन्ग्रेस के साथ सहयोग पर बल दिया।
- मॉन्टेग्यू घोषणा (1917 ई.) को उदारवादियों ने भारत के मैग्नाकार्टा की संज्ञा दी। मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट के आधार पर ही भारत सरकार अधिनियम, 1919 निर्मित हुआ।
- 1918 ई. में सुरेंद्रनाथ बनर्जी के नेतृत्व में कॉन्ग्रेस के उदारवादी नेताओं ने मॉन्टेग्यू सुधारों का स्वागत किया तथा कॉन्ग्रेस से अलग होकर **अखिल भारतीय उदारवादी संघ** की स्थापना की।
- राजकुमार शुक्ल बिहार के चंपारण ज़िले (वर्तमान में पश्चिमी चंपारण ज़िला) के कृषक और स्वतंत्रता सेनानी थे। शुक्ल चंपारण में तिनकठिया प्रथा को लेकर काफी व्यथित थे और उनके आमत्रंण पर ही गांधी जी चंपारण गए और नील की फसल के लिये लागू तिनकठिया प्रथा के विरोध में चंपारण में सत्याग्रह का पहला सफल प्रयोग किया।
- महात्मा गांधी द्वारा चंपारण सत्याग्रह के सफल नेतृत्व के बाद ही रवींद्रनाथ टैगोर ने उन्हें पहली बार **महात्मा** की उपाधि दी।
- महात्मा गांधी ने दिसंबर 1924 में बेलगाम (कर्नाटक) में कॉन्ग्रेस के एकमात्र वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता की थी। साथ ही 1937 में 'अखिल भारतीय हरिजन संघ' की स्थापना भी की।
- 'पब्लिक सेफ्टी बिल' को मोतीलाल नेहरू ने भारतीय गुलामी विधेयक न. 1 की संज्ञा की दी।
- सुभाष चंद्र बोस ने भगत सिंह के बारे में कहा था, "भगत सिंह ज़िंदाबाद और इनकलाब ज़िंदाबाद का एक ही अर्थ है।"
- भारत छोड़ो आंदोलन (1942 ई.) के समय ही गांधीजी को अपनी पत्नी कस्तूरबा गांधी और निजी सचिव महादेव देसाई के देहांत की सूचना मिली।
- भारत छोड़ो आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम ऐसा आंदोलन था जो पूरी तरह **नेतृत्वविहीन** था, इसी आंदोलन ने **करो या मरो (Do or Die)** का नारा दिया।
- भारत छोड़ो का नारा यूसुफ मेहर अली ने दिया था।
- महात्मा गांधी ने क्रिप्स प्रस्तावों पर टिप्पणी की थी कि यह **उत्तरतिथीय चेक** (Post-Dated Cheque) है तथा किसी और ने संभवत: जवाहरलाल नेहरू ने इसमें यह जोड़ दिया कि 'ऐसे बैंक के नाम, जो टूट रहा है'।
- **विनायक दामोदर सावरकर** ने 1904 ई. में **अभिनव भारत समाज** नामक संस्था की स्थापना की थी।
- **बी.आर. अंबेडकर** ने दलितों का प्रतिनिधि करने के लिये तीनों गोलमेज़ सम्मेलन में भाग लिया था।
- आज़ाद हिंद फौज का प्रधान कार्यालय **रंगून** में स्थित था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'भारत छोड़ो' का नारा किसने दिया था?
M.P.P.C.S. (Pre) 2018
(a) महात्मा गांधी (b) जवाहरलाल नेहरू
(c) यूसुफ मेहर अली (d) अरुणा आसफ अली

2. 'प्लांड इकोनॉमी फॉर इंडिया' पुस्तक के लेखक कौन हैं?
M.P.P.C.S. (Pre) 2018
(a) एम. विश्वेश्वरैया (b) जे.आर.डी. टाटा
(c) जी.डी. बिरला (d) पट्टाभि सीतारमैया

3. इनमें से किसने द्वितीय गोलमेज़ सम्मेलन में भाग नहीं लिया था?
M.P.P.C.S. (Pre) 2017
(a) महादेव देसाई (b) प्यारेलाल नैयर
(c) मदनमोहन मालवीय (d) जवाहरलाल नेहरू

4. चटगाँव अर्मरी रेड से इनमें से कौन संबंधित था?
M.P.P.C.S. (Pre) 2016
(a) सूर्य सेन (b) भगत सिंह
(c) रामप्रसाद बिस्मिल (d) अशफाक उल्लाह

5. वेवेल योजना किस वर्ष प्रस्तुत की गई थी? **M.P.P.C.S. (Pre) 2016**
(a) 1942 ई. (b) 1943 ई.
(c) 1944 ई. (d) 1945 ई.

6. अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना किस वर्ष हुई थी? **M.P.P.C.S. (Pre) 2014**
(a) 1905 ई. (b) 1904 ई.
(c) 1907 ई. (d) 1906 ई.

7. 1938 ई. के लिये भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का अध्यक्ष किसे चुना गया था? **M.P.P.C.S. (Pre) 2014**
(a) जवाहरलाल नेहरू
(b) सुभाष चंद्र बोस
(c) अबुल कलाम आज़ाद
(d) वल्लभभाई पटेल

8. भारत के विभाजन से संबंधित 'माउंटबेटन योजना' की सरकारी तौर पर घोषणा कब हुई थी? **M.P.P.C.S. (Pre) 2014**
(a) 4 जून, 1947 (b) 10 जून, 1947
(c) 3 जुलाई, 1947 (d) 3 जून, 1947

9. निम्नलिखित में से किसने 'गदर पार्टी' का गठन किया? **M.P.P.C.S. (Pre) 2013**
(a) वी.डी. सावरकर (b) रासबिहारी बोस
(c) मदनलाल ढींगरा (d) लाला हरदयाल

10. 'आज़ाद हिंद फौज' का प्रधान कार्यालय कहाँ स्थित था? **M.P.P.C.S. (Pre) 2013**
(a) टोकियो (b) रंगून
(c) बर्लिन (d) दिल्ली

11. निम्नलिखित में से कौन प्रसिद्ध 'आई.एन.ए. मुकदमे' के वकील थे? **M.P.P.C.S. (Pre) 2012**
(a) सुभाष चंद्र बोस (b) सी. राजगोपालाचारी
(c) आसफ अली (d) भूलाभाई देसाई

12. निम्नलिखित में से किसने तीनों गोलमेज़ सम्मेलनों में भाग लिया था? **M.P.P.C.S. (Pre) 2012**
(a) वल्लभभाई पटेल
(b) मदनमोहन मालवीय
(c) बी.आर. अंबेडकर
(d) उपर्युक्त में से किसी ने नहीं

13. निम्नलिखित में से किसने क्रांतिकारियों के संगठन 'अभिनव भारत' को संगठित किया था?
(a) जतींद्रनाथ मुखर्जी
(b) मदनलाल ढींगरा
(c) विनायक दामोदर सावरकर
(d) लाला हरदयाल

14. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस ने पहला असहयोग आंदोलन किस वर्ष शुरू किया था?
(a) 1917 ई. (b) 1918 ई.
(c) 1920 ई. (d) 1924 ई.

15. राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान घटित चौरी-चौरा कांड का संबंध निम्नलिखित में किस आंदोलन से है?
(a) स्वदेशी आंदोलन
(b) असहयोग आंदोलन
(c) सविनय अवज्ञा आंदोलन
(d) भारत छोड़ो आंदोलन

16. स्वराज पार्टी को संस्थापित किया था-
(a) बाल गंगाधर तिलक तथा लाला लाजपत राय
(b) महात्मा गांधी तथा मोतीलाल नेहरू
(c) वल्लभभाई पटेल तथा जवाहरलाल नेहरू
(d) मोतीलाल नेहरू तथा सी.आर. दास

17. 1927 ई. में गठित साइमन आयोग का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(a) भारत में संवैधानिक सुधार पर विचार करना
(b) शिक्षा में सुधार करना
(c) कृषि क्षेत्र में सुधार करना
(d) सैनिक क्षमता का मूल्यांकन करना

18. कॉन्ग्रेस ने 1929 ई. के लाहौर अधिवेशन में कॉन्ग्रेस का लक्ष्य 'पूर्ण स्वराज' घोषित किया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी?
(a) महात्मा गांधी (b) जवाहरलाल नेहरू
(c) सुभाष चंद्र बोस (d) मोतीलाल नेहरू

19. ऐतिहासिक 'दांडी मार्च' का संबंध किस घटना से है?
(a) चुनाव बहिष्कार
(b) नमक कानून तोड़ने से
(c) अस्पृश्यता उन्मूलन से
(d) हिंदू-मुस्लिम एकता से

20. महात्मा गांधी धरसाना नमक गोदाम पर कॉन्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं के हमले के समय कहाँ थे?
(a) यरवदा जेल में (b) साबरमती जेल में
(c) अहमदनगर जेल में (d) आगा खाँ पैलेस पूना में

21. निम्नलिखित में से किसका स्थगन गांधी-इर्विन समझौते में किया जाना प्रस्तावित था?
(a) असहयोग आंदोलन (b) खिलाफत आंदोलन
(c) गोलमेज़ सम्मेलन (d) सविनय अवज्ञा आंदोलन

22. अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना किसने की थी?
(a) महात्मा गांधी (b) डॉ. भीमराव अंबेडकर
(c) नारायण गुरु (d) जवाहरलाल नेहरू

23. बी.आर. अंबेडकर तथा महात्मा गांधी के मध्य एक समझौता हुआ, जो कहलाता है-
(a) लंदन समझौता (b) लखनऊ समझौता
(c) पूना समझौता (d) दिल्ली समझौता

24. प्रांतीय सरकारों का गठन निम्नलिखित में किस अधिनियम के तहत किया गया था?
(a) 1935 का अधिनियम (b) 1937 का अधिनियम
(c) 1919 का अधिनियम (d) 1942 का अधिनियम

25. सुभाष चंद्र बोस के त्यागपत्र के बाद भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का अध्यक्ष कौन बना?
(a) राजेंद्र प्रसाद
(b) वल्लभभाई पटेल
(c) अबुल कलाम आज़ाद
(d) जवाहरलाल नेहरू

26. सुभाष चंद्र बोस भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का अध्यक्ष कितनी बार बने?
(a) एक बार (b) दो बार
(c) तीन बार (d) चार बार

27. 1937 ई. में प्रांतों में सरकार निर्माण के उपरांत कॉन्ग्रेस का शासन कितने माह तक चला?
(a) 26 माह (b) 28 माह
(c) 30 माह (d) 32 माह

उत्तरमाला

1. (c)	2. (a)	3. (d)	4. (a)	5. (d)	6. (d)	7. (b)	8. (d)	9. (d)	10. (b)
11. (d)	12. (c)	13. (c)	14. (c)	15. (b)	16. (d)	17. (a)	18. (b)	19. (b)	20. (a)
21. (d)	22. (a)	23. (c)	24. (a)	25. (a)	26. (b)	27. (b)			

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 10-20 शब्दों/एक-दो पंक्तियों में दीजिये)

1. राजकुमार शुक्ल **M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
2. चौरी-चौरा घटना **M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
3. जलियाँवाला बाग हत्याकांड **M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
4. गोपाल कृष्ण गोखले **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
5. मुस्लिम लीग **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
6. एनी बेसेंट **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
7. दांडी मार्च **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
8. क्रिप्स मिशन **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
9. पूना पैक्ट **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
10. भारत छोड़ो आंदोलन **M.P.P.C.S. (Mains) 2014**
11. काकोरी कांड **M.P.P.C.S. (Mains) 2014**

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 50 शब्दों या 5 से 6 पंक्तियों में दीजिये)

1. वेवेल योजना
2. कैबिनेट मिशन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

3. नेहरू रिपोर्ट क्या है?
4. लाहौर अधिवेशन कब हुआ?
5. मुस्लिम लीग की पाकिस्तान मांग पर चर्चा कीजिये।
6. लखनऊ समझौता के बारे में बताइये।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100/200/300 शब्दों में दीजिये)

1. मध्य प्रदेश के झंडा सत्याग्रह आंदोलन पर प्रकाश डालिये। **(300 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
2. उन परिस्थितियों का वर्णन कीजिये जिनमें भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
3. गांधीजी ने देश के विभाजन को क्यों स्वीकार किया? **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
4. जबलपुर झंडा सत्याग्रह (1923) पर प्रकाश डालिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
5. स्वराज पार्टी पर एक संक्षिप्त लेख लिखें। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
6. उदारवादियों (1885-1905) का मूल्यांकन कीजिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
7. कॉन्ग्रेस ने देश विभाजन को क्यों स्वीकार कर लिया? समझाकर लिखिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
8. सूरत की फूट पर एक टिप्पणी लिखिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
9. गांधी-इर्विन समझौते का संक्षिप्त वर्णन कीजिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
10. भारत की स्वतंत्रता में सहायक तत्त्वों का वर्णन कीजिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2014**
11. असहयोग आंदोलन ने कॉन्ग्रेस के आधार को किस प्रकार विस्तारित किया? स्पष्ट कीजिये।
12. सविनय अवज्ञा आंदोलन के बारे में आप क्या जानते हैं? संक्षिप्त परिचय दीजिये।
13. होमरूल आंदोलन के बारे में आप क्या जानते हैं? स्पष्ट कीजिये।
14. आज़ाद हिंद फौज पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

अध्याय 11

राष्ट्रीय आंदोलन में मज़दूरों एवं महिलाओं की सहभागिता (Participation of Labourers and Women in National Movement)

भारत की स्वतंत्रता के लिये राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत 1885 ई. में कॉन्ग्रेस की स्थापना के साथ हुई। आरंभ से ही इस आंदोलन में भारत के बुद्धिजीवियों एवं मध्यम वर्ग का वर्चस्व रहा जबकि मज़दूरों एवं महिलाओं की सहभागिता शुरुआती दौर में बहुत कम थी। जिस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आधुनिक उद्योगों की स्थापना के साथ ही भारत में मज़दूर संघों की गतिविधियाँ दिखाई देने लगीं, उसी प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन में जब गांधीवादी चरण की शुरुआत हुई तो महिलाओं की सहभागिता इस आंदोलन में दिखने लगी।

11.1 ब्रिटिश भारत में मज़दूर आंदोलन *(Labour Movements in British India)*

- ब्रिटिश भारत में मज़दूरों के शोषण, उनकी समस्याओं तथा कारखानों में विद्यमान असुविधाजनक कार्य परिस्थितियों में सुधार हेतु 1878 ई. में **सोराबजी शपूर जी बंगाली** ने सार्थक प्रयास किया। उन्होंने बंबई विधानसभा में श्रमिकों की कार्यावधि के बारे में विधेयक पेश किया परंतु वह पारित नहीं हो सका। इससे पूर्व 1870 ई. में बंगाल के शशिपाद बनर्जी ने मज़दूरों के लिये एक क्लब की स्थापना की और **भारत श्रमजीवी** नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया।
- भारत में गठित प्रथम श्रमिक संघ **बंबई मिल हैंड्स एसोसिएशन** था, जिसकी स्थापना 1890 ई. में **एन.एम. लोखंडे** ने की थी- लोखांडे ने 'दीनबंधु' नामक एक अंग्रेज़ी मराठी साप्ताहिक पत्र भी निकाला।
- 1897 ई. में स्थायी सदस्यता तथा स्पष्ट नियमों के साथ पहली बार एक मज़दूर संगठन **अमलगमेटिड सोसायटी ऑफ रेलवे सर्वेंट्स ऑफ इंडिया एंड बर्मा** का गठन हुआ।
- भारतीय मज़दूर वर्ग द्वारा प्रथम संगठित हड़ताल ब्रिटिश स्वामित्व वाली रेलवे में तब हुई, जब 1899 ई. में ग्रेट इंडियन पेनिन्सुलार में कार्यरत श्रमिकों ने कम मज़दूरी और अधिक कार्य अवधि के कारण हड़ताल कर दी।
- श्रमिक संगठनों को स्वदेशी आंदोलन के नेताओं का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। मजदूरों की अनेक हड़तालों में वे सक्रिय रहें।
- 1908 ई. में क्रांतिकारी नेता बाल गंगाधर तिलक को **6 वर्ष की सज़ा** होने पर बंबई के कपड़ा मज़दूरों ने लगभग एक सप्ताह की हड़ताल कर दी, जो मज़दूरों की पहली राजनीतिक हड़ताल मानी जाती है।

श्रमिक संघों का गठन *(Formation of labour unions)*

- भारत का पहला आधुनिक मज़दूर संगठन **मद्रास मज़दूर संघ** था, जिसकी स्थापना 1918 ई. में बी.पी. वाडिया द्वारा की गई थी।
- मज़दूरों के लिये अखिल भारतीय स्तर का प्रथम संगठन 1920 ई. में एन.एम. जोशी, जोसेफ बैपटिस्ट तथा लाला लाजपत राय के प्रयासों से **अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कॉन्ग्रेस (एटक)** के नाम से बनाया गया।
- एटक का प्रथम सम्मेलन 1920 ई. में बंबई में आयोजित किया गया, इसके प्रथम अध्यक्ष **लाला लाजपत राय** थे तथा दीवान चमनलाल महामंत्री थे।
- कॉन्ग्रेस ने अभी तक मज़दूरों की मांगों एवं अधिकारों को अपने घोषणा-पत्र में शामिल नहीं किया था। सर्वप्रथम 1920 ई. के नागपुर अधिवेशन में श्रमिकों की न्यायोचित मांग तथा उनके संघर्ष के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई।
- लाला लाजपत राय के अतिरिक्त सी.आर. दास, जी.ए. सेन गुप्ता, जी.एफ. एंड्रूज, सुभाष चंद्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं ने भी **अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कॉन्ग्रेस** (एटक) की अध्यक्षता की थी।

अध्याय
12

ब्रिटिश गवर्नर, गवर्नर जनरल, वायसरॉय (British Governor, Governor General, Viceroy)

भारत में ब्रिटिश कंपनी के आगमन के साथ ही गवर्नर अथवा गवर्नर जनरल का नाम सुना जाने लगा। सामान्यत: यह पद भारत में कंपनी के सर्वोच्च पदाधिकारी को प्रदान किया जाता था। गवर्नर जनरल ब्रिटिश भारत का एक सर्वोच्च अधिकारी होता था। यह पद केवल अंग्रेज़ों के लिये आरक्षित था। ब्रिटिश भारत में किसी भी भारतीय को इस पद पर नहीं रखा गया। 1858 ई. तक गवर्नर जनरल को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के निदेशकों द्वारा चयनित किया जाता था और वह उन्हीं के प्रति उत्तरदायी होता था। 1858 ई. के अधिनियम के द्वारा गवर्नर जनरल को वायसरॉय कहा जाने लगा और अब उसकी नियुक्ति में ब्रिटेन के महाराजा, ब्रिटिश सरकार और भारत के राज्य सचिव की भूमिका होने लगी जो भारत के स्वतंत्र होने तक चलती रही।

ब्रिटिश गवर्नर, गवर्नर जनरल, वायसरॉय

बंगाल के गवर्नर	बंगाल के गवर्नर जनरल	भारत के गवर्नर जनरल	भारत के वायसरॉय	स्वतंत्र भारत के गवर्नर जनरल
रॉबर्ट क्लाइव (1757–60, 1765–67 ई.)	**वारेन हेस्टिंग्स** (1774–85 ई.)	**लॉर्ड विलियम बैंटिंक** (1833–35 ई.)	**लॉर्ड कैनिंग** (1858–62 ई.)	**लॉर्ड माउंटबेटन** (1947–48)
हालवेल (1760 ई.)	लॉर्ड कॉर्नवालिस (1786–93 ई.)	चार्ल्स मेटकॉफ (1835–36 ई.)	लॉर्ड एल्गिन प्रथम (1862–63 ई.)	सी. राजगोपालाचारी (1948–50)
वेंसिटार्ट (1760–65 ई.)	सर जॉन शोर (1793–98 ई.)	लॉर्ड ऑकलैंड (1836–42 ई.)	सर जॉन लॉरेंस (1864–69 ई.)	
वेरेलस्ट (1767–69 ई.)	लॉर्ड वेलेजली (1798–1805 ई.)	लॉर्ड एलनबरो (1842–44 ई.)	लॉर्ड मेयो (1869–72 ई.)	
जॉन कर्टियर (1769–72 ई.)	सर जॉर्ज बार्लो (1805–07 ई.)	लॉर्ड हार्डिंग प्रथम (1844–48 ई.)	लॉर्ड नार्थब्रुक (1872–76 ई.)	
वारेन हेस्टिंग्स (1772–74 ई.)	लॉर्ड मिंटो प्रथम (1807–13 ई.)	लॉर्ड डलहौजी (1848–56 ई.)	लॉर्ड लिटन (1876–80 ई.)	
	लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813–23 ई.)	लॉर्ड कैनिंग (1856–58 ई.)	लॉर्ड रिपन (1880–84 ई.)	
	लॉर्ड एमहर्स्ट (1823–28 ई.)		लॉर्ड डफरिन (1884–88 ई.)	
	लॉर्ड विलियम बैंटिंक (1828–33 ई.)		लॉर्ड लैंसडाउन (1888–94 ई.)	
			लॉर्ड एल्गिन-II (1894–99 ई.)	
			लॉर्ड कर्जन (1899–1905 ई.)	
			लॉर्ड मिंटो द्वितीय (1905–10 ई.)	
			लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (1910–16)	
			लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916–21 ई.)	
			लॉर्ड रीडिंग (1921–26 ई.)	
			लॉर्ड इर्विन (1926–31 ई.)	
			लॉर्ड विलिंगटन (1931–36 ई.)	
			लॉर्ड लिनलिथगो (1936–44 ई.)	
			लॉर्ड वेवेल (1944–47 ई.)	
			लॉर्ड माउंटबेटन (1947 ई.)	

अध्याय
13

गणतंत्र के रूप में भारत का उदय (Rise of India as a Republic)

स्वतंत्रता के बाद भारत का एक राष्ट्र के रूप में उभरना अचानक घटित होने वाली घटना न होकर एक ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम था। भारतीय सभ्यता में विविधता के लक्षणों को हम प्राचीन काल से ही देख सकते हैं। जैसा कि कवि **रवींद्रनाथ टैगोर** ने भी माना है कि "भारत की एकता भावनाओं की एकता है।" स्वतंत्रता आंदोलन ने भारतीयों को राजनीतिक व भावनात्मक रूप से जोड़ दिया था और भारत को एक राष्ट्र का स्वरूप दे दिया था, लेकिन अभी भी भारत को पूरी तरह से राष्ट्र नहीं कहा जा सकता था, बल्कि यह राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में था। भारतीय राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया दीर्घकालीन व सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया थी।

राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाले नेतागण, जो विभिन्न क्षेत्र, भाषा व धर्म से संबद्ध थे, भी जब इस नए गणतंत्र की बुनियाद रख रहे थे तो उन्होंने भारत के एकीकरण और राष्ट्रीय एकता की प्रक्रिया को न सिर्फ बनाए रखना चाहा बल्कि उसे भविष्य में और अधिक विकसित करने के बारे में भी सोचा।

राष्ट्र निर्माताओं ने भारत की विविधता को एक समस्या के रूप में न देखते हुए सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ इस विविधता को एक शक्ति का स्रोत माना, क्योंकि भारत दुनिया का सर्वाधिक जटिल सांस्कृतिक विभिन्नताओं वाला देश है। अतः स्वतंत्र भारत का निर्माण **विविधता में एकता** की अवधारणा के साथ हुआ। हालाँकि एक राष्ट्र के रूप में भारत के निर्माण में तमाम जटिलताएँ भी मौजूद थीं परंतु स्वतंत्रता उपरांत भारतीय राष्ट्र का निर्माण एक वृहद् रणनीति के तहत किया गया था। इस रणनीति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष संविधान था (क्योंकि संविधान निर्माताओं ने भारतीय संविधान में समस्त नागरिकों को धर्म, जाति व लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त कर, समाज के हर वर्ग को पूर्ण समानता देने की बात कही) । आरक्षण तथा सकारात्मक प्रतिबद्धता के माध्यम से भारतीय संविधान ने वंचित वर्गों के हितों को पुष्ट करने का प्रयास किया। इस संविधान को **26 जनवरी, 1950** को पूर्णरूपेण लागू करने के साथ ही भारत का उदय गणतंत्र के रूप में हुआ।

हालाँकि भारतीय राष्ट्रीय एकता को मज़बूत बनाने का काम संविधान के माध्यम से किया गया, फिर भी कुछ विखंडनकारी तत्त्व उभरने में कामयाब रहे। इन तत्त्वों के कारण भारतीय एकता पर विखंडित होने का खतरा मँडराने लगा। स्वतंत्रता के बाद के आरंभिक वर्षों में सबसे बड़ा विभाजनकारी मुद्दा भाषा की समस्या थी। राज्यों के पुनर्गठन में भी भाषा के कारण समस्या उत्पन्न होने लगी थी।

13.1 राज्यों का पुनर्गठन *(Reorganization of States)*

भाषा व संस्कृति का गहरा संबंध होता है तथा इसका असर जनता के रीति-रिवाज़ों पर भी पड़ता है। वैसे भी हिंदुस्तान विविधताओं से भरा देश है, जहाँ कई प्रकार की भाषाएँ, विभिन्न लिपियाँ, व्याकरण, शब्द-भंडार व साहित्यिक परंपराएँ पहले से ही विद्यमान हैं।

राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस पार्टी ने सर्वप्रथम **1917 ई.** में ही स्वतंत्रता के बाद होने वाले राज्यों के गठन को भाषायी आधार पर करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की थी। **1920 ई.** में कॉन्ग्रेस के **नागपुर अधिवेशन** के बाद भाषायी आधार पर ही कॉन्ग्रेस प्रदेश कमेटियों का गठन हुआ था। इससे उपरोक्त आधारों पर भाषायी गठन के सिद्धांत को बढ़ावा मिला। भाषा के आधार पर कॉन्ग्रेस की उपसमितियों को संगठित करने के निर्णय का गांधीजी ने भी स्वागत किया था। स्वतंत्रता के बाद नए भारत में प्रांतों का गठन भाषायी आधार पर करने का समर्थन महात्मा गांधी, पं. नेहरू, सरदार पटेल व अन्य कॉन्ग्रेसी नेताओं द्वारा भी किया गया था।

परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत देश के सामने भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की जटिलताएँ समस्या बनकर खड़ी हो गईं, क्योंकि ब्रिटिश भारत में भारतीय प्रदेशों की जो सीमाएँ बनाई गई थीं, वे ब्रिटिश हितों के अनुरूप व अतार्किक थीं। इन प्रदेशों की सीमाओं का निर्धारण करते समय ब्रिटेन द्वारा भाषा व संस्कृति की समरूपता का ध्यान नहीं रखा गया था।

अध्याय
14

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के प्रमुख घटनाक्रम (Major Events after Independence)

भारत को 15 अगस्त, 1947 को आज़ादी प्राप्त होने के उपरांत पं. जवाहरलाल नेहरू ने संविधान सभा तथा राष्ट्र को संबोधित करते हुए **ट्राइस्ट विद डेस्टिनी** नामक अपने अविस्मरणीय भाषण में भारतीय जनता की भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा था- "मध्य रात्रि की इस बेला में जब पूरी दुनिया नींद के आगोश में सो रही है, हिंदुस्तान एक नई ज़िंदगी और आज़ादी के वातावरण में अपनी आँखें खोल रहा है। यह एक ऐसा क्षण है जो इतिहास में बहुत ही कम प्रकट होता है। जब हम पुराने युग से एक नए युग में प्रवेश करते हैं, तब एक युग का अंत होता है और किसी राष्ट्र की लंबे समय से दबी हुई आत्मा मुखर हो उठती है। उचित यही है कि हम इस पुनीत क्षण में भारत और उसकी जनता की सेवा के प्रति और उससे भी व्यापकतर मानवता के हित में समर्पित होने का संकल्प करें।"

स्वतंत्र भारत के सामने कई समस्याएँ विकराल रूप में विद्यमान थीं। सर्वप्रथम नेहरू मंत्रिमंडल की ज़िम्मेदारी इन समस्याओं का समाधान निकालने की थी। आज़ाद भारत के पास उच्च क्षमता व आदर्श प्रस्तुत करने वाले नेता मौजूद थे। इन नेताओं ने पं. नेहरू के नेतृत्व में देश की समस्याओं का समाधान निकालने के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई। इनमें अधिकांशत: वही लोग थे, जिन्होंने स्वतंत्रता के लिये लड़े गए आंदोलन में प्रमुख रूप से भूमिका निभाई थी। इन नेताओं में सरदार वल्लभभाई दृढ़ इच्छाशक्ति के स्वामी तथा प्रशासनिक कार्यों में निपुण थे। इनके अलावा अबुल कलाम आज़ाद, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, सी. राजगोपालाचारी, सरोजिनी नायडू आदि विद्वत्ता और पांडित्य से भरपूर नेता थे।

स्वतंत्र भारत के समस्त नेता व्यक्तिगत रूप से ईमानदार तथा सादा जीवन व्यतीत करने वाले थे। राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों व आदर्शों के प्रति इन सभी नेताओं ने आपसी सहमति प्रदर्शित की थी तथा सभी के द्वारा एक सुदृढ़ भारत के निर्माण का प्रयास किया गया। आज़ाद भारत का प्रथम मंत्रिमंडल न केवल एक समावेशी भारत का प्रतिनिधित्व करता था बल्कि यह असहमतियों के प्रति परस्पर सहमति के जज़्बे का भी द्योतक था।

इसके अतिरिक्त पहले मंत्रिमंडल की एक अन्य प्रमुख विशेषता यह थी कि इसमें समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधित्व का ध्यान रखा गया था, जैसे- स्वास्थ्य मंत्री राजकुमारी अमृत कौर महिलाओं का तथा डॉ. भीमराव अंबेडकर व जगजीवन राम आदि पिछड़े समुदाय का प्रतिनिधित्व करते थे।

14.1 रियासतों का एकीकरण *(Integration of Princely States)*

स्वतंत्रता के समय भारत के अंतर्गत तीन तरह के क्षेत्र थे। पहला ब्रिटिश भारत के क्षेत्र (ब्रिटिश प्रांत) जो कि भारत के गवर्नर जनरल के सीधे नियंत्रण में थे। दूसरे ऐसे क्षेत्र थे जो देशी रियासतें (राजा के शासन के अधीन लेकिन ब्रिटिश राजशाही से संबंद्ध) थे, तीसरे प्रकार के अंतर्गत फ्राँस और पुर्तगाल के औपनिवेशिक क्षेत्र (चंद्रनगर, पांडिचेरी, गोवा आदि) थे। इन सभी क्षेत्रों को एक राजनीतिक इकाई के रूप में एकीकृत करना भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस का घोषित लक्ष्य था। स्वतंत्र भारत की अंतरिम सरकार ने समय के साथ इन लक्ष्यों को हासिल भी किया।

देशी रियासतों की संख्या को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है, निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि रियासतों की कुल संख्या 500 से अधिक थी। इनके आकार, हैसियत तथा रियासती संरचना में भी भिन्नता थी। जहाँ एक तरफ कश्मीर व हैदराबाद जैसी बड़ी रियासतें थीं, जो किसी यूरोपियन देश के बराबर थीं, तो वहीं दूसरी तरफ इतनी छोटी रियासतें भी थीं, जिनके तहत केवल एक अथवा दो दर्जन गाँव आते थे।

कंपनी शासनकाल में ही अनेक संधियों के माध्यम से इन देशी रियासतों ने ब्रिटेन को 'सर्वोच्च शक्ति' स्वीकार कर लिया था। इन रियासतों को कच्चे माल, औद्योगिक उत्पादन और रोज़गार के अवसरों के लिये ब्रिटिश भारत पर निर्भर रहना पड़ता था। इनमें से कई देशी रियासतों के पास अपनी मुद्रा, रेलवे लाइन तथा मुहरें भी थीं। देश के लगभग 40% भू-भाग

अध्याय
15

मध्य प्रदेश के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व (Major Historical Personalities of Madhya Pradesh)

भारत के मध्य में अवस्थित मध्य प्रदेश देश के हृदय के समान है। मध्य प्रदेश की भूमि साहित्य, कला, स्थापत्य के लिये जितनी प्रसिद्ध है उतनी ही यह यहाँ के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तियों के लिये भी प्रसिद्ध रही है। इस राज्य की भूमि ने जहाँ अवंतिबाई लोधी, अहिल्याबाई होल्कर, रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई आदि वीरांगनाओं को जन्म दिया है वहीं दूसरी ओर यह तात्या टोपे, टंट्या भील, पं. चंद्रशेखर आज़ाद आदि ऐतिहासिक व्यक्तियों की जन्म एवं कर्मभूमि भी रही है।

तानसेन

संगीत सम्राट तानसेन भारत के एक महान गायक एवं मुगलकाल के प्रमुख संगीतकार थे। तानसेन के प्रारंभिक जीवन से संबंधित जानकारियों में काफी विवाद हैं। मध्यकाल में 16वीं शताब्दी की शुरुआत में उनका जन्म मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के बेहट गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम **रामतनु पांडेय** था। अकबर के दरबार में आने से पहले तानसेन रीवा के राजा रामचंद्र के दरबार की शोभा बढ़ाते थे। मुगल बादशाह **अकबर** ने उन्हें अपने **नवरत्नों** में शामिल किया। उन्होंने संगीत के कई रागों की रचना की जिनमें **मियाँ की मल्हार, ध्रुपद गायन, दीप राग, मेघ मल्हार** अधिक प्रसिद्ध है। तानसेन ने **संगीतसार, रागमाला, श्रीगणेश स्तोत्र** नामक तीन संगीत ग्रंथों की रचना भी की। 1586 ई. (कुछ स्रोतों के अनुसार 1589 ई.) में तानसेन की मृत्यु हो गई। उनकी समाधि उनकी इच्छानुसार उनके गुरु मुहम्मद गौस खाँ की समाधि के पास ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में स्थापित की गई।

अवंतिबाई लोधी

अवंतिबाई लोधी का जन्म अगस्त 1831 में मध्य प्रदेश के ज़िला **सिवनी** के ग्राम मनकेहणी में ज़मींदार श्री जुझार सिंह के परिवार में हुआ था। 1849 ई. में उनका विवाह रामगढ़ रियासत के राजकुमार विक्रमजीत सिंह के साथ हुआ। अवंतिबाई बाल्यकाल से ही साहसी एवं सुंदर थीं। तलवार चलाना और घुड़सवारी करना उनका प्रमुख शौक था। 1850 ई. में विक्रमजीत सिंह रामगढ़ रियासत के राजा बने। यह रियासत वर्तमान में मध्य प्रदेश के मंडला ज़िले में स्थित है। अवंतिबाई ने दो पुत्रों को जन्म दिया। इसके कुछ समय उपरांत अवंतिबाई के पति विक्रमजीत सिंह अर्द्ध-विक्षिप्त हो गए और उनकी मृत्यु हो गई। अतः राज्य का सारा भार रानी अवंतिबाई के कंधों पर आ गया। उन्होंने इस उत्तरदायित्व को अच्छे ढंग से निभाया। चूँकि इस समय भारत ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन था और तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी अपने **व्यपगत नीति** (Doctrine of lapse) के तहत कई देशी रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल कर रहा था। यह खतरा रामगढ़ रियासत पर भी मँडरा रहा था। इसीलिये अवंतिबाई ने अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध लोगों को संगठित किया तथा सेना को मज़बूत करने का कार्य प्रारंभ कर दिया।

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जब 1857 ई. का विद्रोह हुआ तो रानी अवंतिबाई भी इस विद्रोह में शामिल हो गईं। उन्होंने मंडला के डिप्टी कमिश्नर को मंडला से भगा दिया। इसका बदला लेने के लिये अंग्रेज़ों की एक बड़ी सेना भेजी गई। मार्च 1858 में देवहारगढ़ के जंगल में रानी अवंतिबाई और अंग्रेज़ी सेना के विरुद्ध भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें अंग्रेज़ी सेना ने रानी को चारों ओर से घेर लिया। रानी अवंतिबाई वीरतापूर्वक लड़ीं, उनके सैकड़ों सैनिक मारे गए। अपने को चारों ओर से घिरता देख अपनी पूर्वजा रानी दुर्गावती का अनुसरण करते हुए उन्होंने शत्रुओं द्वारा गिरफ्तार होने से श्रेयस्कर अपना आत्म-बलिदान कर देना समझा और स्वयं तलवार को अपने पेट में घोंपकर शहीद हो गईं।

कहा जाता है कि रानी अवंतिबाई 1857 ई. के विद्रोह के प्रमुख नेताओं में अत्यधिक योग्य थीं, उनके बलिदान, त्याग एवं वीरतापूर्वक लड़ी गई लड़ाई ने उन्हें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के समकक्ष ला दिया। उनकी इसी वीरता के कारण मध्य प्रदेश की जनता उन्हें आज भी सम्मान से याद करती है।

अध्याय
16

सांस्कृतिक विरासत (Cultural Heritage)

भारत विश्व के प्राचीनतम सांस्कृतिक विरासत वाले देशों में से एक है। हमारे देश के सांस्कृतिक व प्राकृतिक स्थल मानव और प्रकृति की सृजनशीलता के जीवंत उदाहरण हैं। यह विरासत हमारी ठोस और अमूर्त ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संपत्ति है। देश की सीमाओं से परे यह विरासत संपूर्ण मानव समाज की साझी विरासत होती है, जो देश को एक अद्वितीय पहचान देती है। यह विरासत हमारे जन्म से पहले के लोगों (पूर्वजों) की सामाजिक व सांस्कृतिक स्थिति की द्योतक होती है, साथ ही इतिहास के विभिन्न कालखंडों में रहने वाले लोगों की याद दिलाती है। इसे जानकर आम जन में उन ऐतिहासिक लोगों के प्रति सम्मान की भावना बढ़ती है। इसलिये हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपनी विरासत को बचाए रखें और अगली पीढ़ी तक उसे पहुँचाएँ।

विश्व की सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक विरासत से संबंधित अभिसमय **16 नवंबर, 1972** को यूनेस्को की महासभा द्वारा पेरिस में स्वीकृत किया गया। इसका प्रमुख उद्देश्य विश्व विरासत को संरक्षित करना था। यूनेस्को द्वारा विश्व के ऐसे स्थलों को चयनित और संरक्षित किया जाता है जो सांस्कृतिक दृष्टि से मानवता के लिये अति महत्त्वपूर्ण हैं। इन स्थलों में स्मारक, पर्वत, वन, झील, मरुस्थल, भवन या शहर आदि शामिल होते हैं। इन स्थलों का चुनाव सदस्य राष्ट्रों के प्रतिवेदन के आधार पर विश्व धरोहर समिति द्वारा **विश्व प्रकृति संरक्षण संघ** व **अंतर्राष्ट्रीय स्मारक और स्थल परिषद** की अनुशंसा पर किया जाता है। **विश्व विरासत केंद्र** द्वारा किसी स्थल को धरोहर के रूप में चुनने के लिये निम्नलिखित दस मानदंडों में से कम-से-कम एक पर खरा उतरना आवश्यक होता है-

- उस स्थल का मानवीय मूल्यों के आदान-प्रदान के प्रदर्शन में योगदान हो।
- वह इमारत या भवन वास्तुकला व तकनीक का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हो।
- उस स्थल का मानव की रचनात्मकता का प्रतिनिधित्व करने वाली एक उत्कृष्ट कृति के रूप में प्रसिद्ध होना आवश्यक है।
- वह स्थल सांस्कृतिक परंपरा व सभ्यता का विशिष्ट रूप से प्रतिनिधित्व करता हो।
- वह स्थल ऐतिहासिक घटनाओं, जीवित परंपराओं, मान्यताओं, विचारों के साथ सार्वभौमिक महत्त्व की उत्कृष्ट साहित्यिक एवं कलात्मक कृतियों के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबद्ध हो।
- एक पारंपरिक मानव बस्ती भूमि या समुद्र के उपयोग का विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हो, जो एक संस्कृति (या संस्कृतियों) का प्रतिनिधित्व करती हो तथा मानवीय आदान-प्रदान को अभिव्यक्त करती हो।
- पृथ्वी के इतिहास के प्रमुख चरणों का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता हो।
- पृथ्वी पर जारी जैविक और पारिस्थितिकी प्रक्रियाओं का महत्त्वपूर्ण उदाहरण हो।
- असाधारण प्राकृतिक सौंदर्य तथा सौंदर्ययुक्त परिदृश्य के लिये प्रसिद्ध हो अथवा उत्कृष्ट प्राकृतिक घटना को समाहित किये हुए हो।
- विज्ञान या संरक्षण की दृष्टि से उत्कृष्ट सार्वभौमिक महत्त्व की संकटापन्न प्रजातियों सहित जैव-विविधता के संरक्षण हेतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और मूल्यवान प्राकृतिक स्थलों को समाहित किये हुए हो।

16.1 भारत में वैश्विक स्तर के धरोहर स्थल *(World Heritage Sites in India)*

भारत के स्थलों को विश्व धरोहर स्थल घोषित करने हेतु प्रतिवेदन भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा भेजा जाता है। यह केंद्र सरकार की नोडल एजेंसी है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा केंद्र सरकार, राज्य सरकारों व प्रबंधन ट्रस्टों

अध्याय
17

मध्य प्रदेश के साहित्य एवं साहित्यकार (Literature and Litterateurs of Madhya Pradesh)

मध्य प्रदेश की भूमि साहित्य एवं साहित्यकारों के लिये प्राचीन काल से ही आकर्षण का केंद्र रही है। यहाँ प्राचीन काल में कालिदास, भवभूति आदि जैसे विद्वान हुए हैं, जिनकी रचनाएँ आज भी भारतीय साहित्य का **अनमोल रत्न** हैं। वहीं मध्यकाल में केशवदास, बिहारी लाल, पद्माकर आदि ऐसे विद्वान हुए जिन्होंने न केवल साहित्य की रचना की बल्कि हिन्दी भाषा एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं, जैसे- काव्य, नाटक, उपन्यास, जीवन-चरित, यात्रा-वृत्तांत आदि के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उसी प्रकार आधुनिक भारत में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, शरद जोशी आदि प्रमुख साहित्यकार हुए जिनकी रचनाएँ न केवल मध्य प्रदेश बल्कि भारत की प्रमुख साहित्यिक कृतियों में शामिल हैं।

17.1 प्राचीनकाल के साहित्य एवं साहित्यकार *(Literature and Litterateurs of Ancient Period)*

कालिदास

मध्य प्रदेश के प्राचीनकालीन साहित्यकारों में कालिदास का अग्रणी स्थान है। कालिदास संस्कृत साहित्य के एक महान कवि और नाटककार थे। भारत की सर्वश्रेष्ठ विभूति होने के बावजूद उनके कुल, जन्मस्थान, जन्म-तिथि के संबंध में हमारा इतिहास मौन है परंतु विद्वानों का बहुमत उन्हें उज्जैन का निवासी तथा गुप्तवंशीय शासक चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार से संबंधित मानता है।

कालिदास की रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि प्राचीन भारतीय धर्म, इतिहास और संस्कृति की जानकारी का प्रमुख स्रोत हैं। उनकी साहित्यिक रचनाओं के कारण ही उन्हें **भारत का शेक्सपियर** कहा जाता है। कालिदास के साहित्य को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

- **महाकाव्य :** कालिदास ने दो प्रमुख महाकाव्यों की रचना की थी- (i) कुमारसंभवम्, (ii) रघुवंशम्। **कुमारसंभवम्** को संस्कृत का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है, जिसमें भगवान शिव-पार्वती के पुत्र कुमार कार्तिकेय की जन्म-कथा का वर्णन है। इसमें 17 सर्ग है। जबकि दूसरे महाकाव्य **रघुवंशम्** में रघुकुल के राजाओं का वर्णन है। दिलीप से लेकर लव-कुश तक। इसमें 19 सर्ग है।
- **खंडकाव्य :** कालिदास ने खंडकाव्य के अंतर्गत दो प्रमुख ग्रंथों की रचना की थी- (i) मेघदूतम्, (ii) ऋतुसंहार। **मेघदूतम्** की गणना कालिदास के सर्वश्रेष्ठ काव्य ग्रंथों में होती है। यह एक गीतिकाव्य है, जिसमें विरह से पीड़ित यक्ष और उसकी प्रियतमा यक्षिणी की विरहाकुल दशा का चित्रण किया गया है। इसे वियोग शृंगार का सर्वश्रेष्ठ खंडकाव्य माना गया है। **ऋतुसंहार** में छः ऋतुओं (ग्रीष्म, शरद, वर्षा, बसंत, हेमंत और शिशिर) के प्राकृतिक सौंदर्य का बड़ा मनोरम वर्णन किया गया है।
- **नाटक ग्रंथ :** कालिदास ने तीन प्रमुख नाटकों की रचना की है- (i) अभिज्ञान शाकुंतलम्, (ii) मालविकाग्निमित्रम्, (iii) विक्रमोर्वशीयम्।

अभिज्ञान शाकुंतलम् कालिदास का सबसे प्रसिद्ध नाटक है। इसमें राजा दुष्यंत और ऋषि विश्वामित्र व मेनका की पुत्री शकुंतला के प्रेम परित्याग और पुनर्मिलन का बड़ा ही रोचक वर्णन है। संस्कृत साहित्य में इस ग्रंथ की इतनी लोकप्रियता है कि सर्वप्रथम यूरोपीय भाषा में इसी ग्रंथ का अनुवाद किया गया।

मालविकाग्निमित्रम् कालिदास का पहला नाटक है। इसमें शुंग शासक अग्निमित्र शुंग और मालविका की प्रणय-कथा का वर्णन है। **विक्रमोर्वशीयम्** एक रहस्यों से भरा नाटक है जिसमें राजा पुरूरवा और इंद्रलोक की अप्सरा उर्वशी की प्रेम-कथा का वर्णन है।

अध्याय
18

मध्य प्रदेश की प्रमुख रियासतें (Major States of Madhya Pradesh)

18.1 सिंधिया राजवंश/ग्वालियर रियासत *(Scindia State)*

ग्वालियर का पूर्ववर्ती राज्य 1398 में दिल्ली सल्तनत का हिस्सा बना। तत्पश्चात 1398 में ग्वालियर तोमरो के नियंत्रण में आ गया। 1528 से 1731 तक यह क्षेत्र मुगलों के कब्जे में रहा। 1526 में पेशवा बाजीराव-I ने रानोजी सिंधिया, मल्हारराव होल्कर तथा पवार को मालवा क्षेत्र में चौथ राजस्व (25% हिस्सा) और सरदेशमुखी (10 प्रतिशत से अधिक और ऊपर-चौथ) वसूलने के लिये नियुक्त किया था। रानोजी सिंधिया ने 1731 में मालवा क्षेत्र के एक बड़े हिस्से को और वहाँ की संपत्ति को हासिल किया।

पेशवा बाजीराव-I के द्वारा किया गए बंटवारे के साथ ही सिंधिया रियासत को मान्यता मिल गई। रानोजी सिंधिया ने सिंधिया रियासत के संस्थापक थे। जिन्होंने अपने ग्वालियर राज्य की राजधानी प्राचीन शहर उज्जैन को बनाया। 1810 तक उज्जैन शहर सिंधिया राजघराने की राजधानी रहा।

- रानोजी सिंधिया का मूल स्थान महाराष्ट्र के सतारा ज़िले में कन्हेरखेड़ा (Kanher Kheda) नामक स्थान पर है।
- रानोजी सिंधिया के पांच पुत्र थे- जयप्पा, दत्ताजी, जोतिबा, तुकाजी और महादजी। रानोजी के बाद उनके पुत्र जयप्पा ने राज्य का शासन संभाला किंतु 1759 में नागपुर में उसकी हत्या कर दी गई। इसके बाद शासन के बागडोर उसके पुत्र जनकोजी ने संभाली किंतु 1761 के पानीपत के युद्ध में उसकी मृत्यु हो गई। इसके बाद महादजी सिंधिया ने 1761 में ग्वालियर रियासत का शासन अपने हाथों में लिया।

ग्वालियर रियासत का अस्तित्त्व भारत की आजादी तक 200 वर्षों से भी अधिक समय तक बना रहा।

- तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1819) के दौरान नवंबर 1817 में अंग्रेजों ने महादजी शिंदे के साथ ग्वालियर की संधि की। इस संधि के अनुसार महादजी शिंदे को पिंडारियों के दमन में अंग्रेजों का सहयोग करना था तथा चंबल नदी से दक्षिण-पश्चिम के राज्यों पर से अपना प्रभाव हटाना था।
- 1818 ई. से मराठा संघ और अंग्रेजों के युद्ध में सिंधिया अंग्रेजों के अधीन हो गए और 1947 तक रजवाड़े के रूप में बने रहे।
- 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ग्वालियर रियासत के महाराजा जमाजी राव सिंधिया थे।
- जीवाजी राव सिंधिया 1925 से 15 अगस्त, 1947 तक ग्वालियर रियासत के महाराजा रहे।

ग्वालियर रियासत (सिंधिया राजवंश) के प्रमुख शासक

महादजी सिंधिया (माधवराव सिंधिया)

महादजी सिंधिया (महादजी शिंदे) जिन्हें माधवराव सिंधिया-I के नाम से भी जाना जाता है। माधवराव सिंधिया ने 1761 में सिंधिया रियासत (ग्वालियर रियासत) का शासन संभाला। किंतु 1761 से 1768 तक 7 वर्षों तक उनका शासन उत्तराधिकार संघर्ष में बीता। 1768 के बाद उन्होंने अपनी शक्ति का विस्तार किया तथा आगे चलकर पेशवा की ओर से दिल्ली पर अधिकार किया, बाद में शाहआलम को पुनः दिल्ली की गद्दी पर बैठाया था। माधवराव के काल में सिंधिया और होल्कर रियासतों के संबंध मैत्री से बिगड़ते-बिगड़ते दुश्मनी तक पहुँच गए थे। माधवराव सिंधिया 1794 में देहांतवास होने तक ग्वालियर राजवंश के शासक रहे।

दौलतराव सिंधिया (1794-1827)

महादजी सिंधिया के बाद उनके भाई तुकाजी सिंधिया के पोते दौलत राव ग्वालियर रियासत के उत्तराधिकारी थे। द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान 1803 में ब्रिटिश और दौलतराव सिंधिया के मध्य सुरजी-अंजगांव संधि हुए जिसके परिणामस्वरूप गंगा-जमुना दोआब, दिल्ली-आगरा क्षेत्र तथा बुंदेलखंड के कुछ हिस्से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार में आ गए।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596